

سُورَةُ الْمُلْكِ

Surah 67 — Al-Mulk (The Sovereignty) · Meccan · 30 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ تَبْرَكَ الَّذِي يَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

जिस (खुदा) के कब्जे में (सारे जहाँ की) बादशाहत है वह बड़ी बरकत वाला है और वह हर चीज़ पर कादिर है

2

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ

जिसने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हें आजमाए कि तुममें से काम में सबसे अच्छा कौन है और वह ग़ालिब (और) बड़ा बख़्शने वाला है

3

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۚ مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفُوتٍ ۗ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۚ

जिसने सात आसमान तले ऊपर बना डाले भला तुझे खुदा की आफ़रिनश में कोई कसर नज़र आती है तो फिर आँख उठाकर देख भला तुझे कोई शिगाफ़ नज़र आता है

4

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا ۖ وَهُوَ حَسِيرٌ ۚ

फिर दुबारा आँख उठा कर देखो तो (हर बार तेरी) नज़र नाकाम और थक कर तेरी तरफ पलट आएगी

5

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصْبِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ

और हमने नीचे वाले (पहले) आसमान को (तारों के) चिरागों से ज़ीनत दी है और हमने उनको शैतानों के मारने का आला बनाया और हमने उनके लिए दहकती हुई आग का अज़ाब तैयार कर रखा है

6

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

और जो लोग अपने परवरदिगार के मुनकिर हैं उनके लिए जहन्नुम का अज़ाब है और वह (बहुत) बुरा ठिकाना है

7

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا ۖ وَهِيَ تَفُورُ

जब ये लोग इसमें डाले जाएँगे तो उसकी बड़ी चीख सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी

8

تَكَادُ تَمَيِّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ ۖ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۖ

बल्कि गोया मारे जोश के फट पड़ेगी जब उसमें (उनका) कोई गिरोह डाला जाएगा तो उनसे दारोशाएँ जहन्नुम पूछेगा क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला पैगम्बर नहीं आया था

9

قَالُوا ۖ بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ ۖ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنَّا أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۖ

वह कहेंगे हाँ हमारे पास डराने वाला तो ज़रूर आया था मगर हमने उसको झुठला दिया और कहा कि खुदा ने तो कुछ नाज़िल ही नहीं किया तुम तो बड़ी (गहरी) गुमराही में (पड़े) हो

10

وَقَالُوا ۖ لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ

और (ये भी) कहेंगे कि अगर (उनकी बात) सुनते या समझते तब तो (आज) दोज़खियों में न होते

11

فَاعْتَرَفُوا ۖ بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا ۖ لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ

गरज़ वह अपने गुनाह का इक़रार कर लेंगे तो दोज़खियों को खुदा की रहमत से दूरी है

12

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۖ وَأَجْرٌ ۖ كَبِيرٌ ۖ

बेशक जो लोग अपने परवरदिगार से बेदेखे भाले डरते हैं उनके लिए मग़फ़े़रत और बड़ा भारी अज़्र है

13

وَأَسِرُّوا ۚ قَوْلَكُمْ أَوْ أَجْهَرُوا ۚ بِهِ ۚ إِنَّهُ ۚ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

और तुम अपनी बात छिपकर कहो या खुल्लम खुल्ला वह तो दिल के भेदों तक से खूब वाकिफ़ है

14

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ

भला जिसने पैदा किया वह तो बेखबर और वह तो बड़ा बारीकबीन वाकिफ़कार है

15

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا ۚ فَامْشُوا ۚ فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا ۚ مِنْ رِزْقِهِ ۚ ۚ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ

वही तो है जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए नरम (व हमवार) कर दिया तो उसके अतराफ़ व जवानिब में चलो फिरो और उसकी (दी हुई) रोज़ी खाओ

16

ءَأَمِنْتُمْ مِّنْ فِي السَّمَاءِ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ

और फिर उसी की तरफ़ क़ब्र से उठ कर जाना है क्या तुम उस शख्स से जो आसमान में (हुकूमत करता है) इस बात से बेखौफ़ हो कि तुमको ज़मीन में धँसा दे फिर वह एकबारगी उलट पुलट करने लगे

17

أَمْ أَمِنْتُمْ مِّنْ فِي السَّمَاءِ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۚ ۚ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ

या तुम इस बात से बेखौफ़ हो कि जो आसमान में (सल्लतनत करता) है कि तुम पर पत्थर भरी आँधी चलाए तो तुम्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगा कि मेरा डराना कैसा है

18

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ

और जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने झुठलाया था तो (देखो) कि मेरी नाखुशी कैसी थी

19

أَوَلَمْ يَرَوْا ۚ إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفَّتٍ ۚ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ ۚ إِنَّهُ ۚ بِكُلِّ شَيْءٍ ۚ بَصِيرٌ

क्या उन लोगों ने अपने सरो पर चिड़ियों को उड़ते नहीं देखा जो परो को फैलाए रहती हैं और समेट लेती हैं कि खुदा के सिवा उन्हें कोई रोके नहीं रह सकता बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है

20

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ ۚ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ ۚ إِنَّ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ

भला खुदा के सिवा ऐसा कौन है जो तुम्हारी फ़ौज बनकर तुम्हारी मदद करे काफ़िर लोग तो धोखे ही (धोखे) में हैं भला खुदा अगर अपनी (दी हुई) रोज़ी रोक ले तो कौन ऐसा है जो तुम्हें रज़क दे

21

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ ۚ بَلْ لَّجُّوا ۚ فِي عُتُوٍّ ۚ وَنُفُورٍ

मगर ये कुफ़ार तो सरकशी और नफ़रत (के भँवर) में फँसे हुए हैं भला जो शरूख औंधे मुँह के बाल चले वह ज्यादा हिदायत याफ़ता होगा

22

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ ۚ أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ ۚ مُّسْتَقِيمٍ ۚ

या वह शरूख जो सीधा बराबर राहे रास्त पर चल रहा हो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि खुदा तो वही है जिसने तुमको नित नया पैदा किया

23

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَرَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا ۚ مَا تَشْكُرُونَ

और तुम्हारे वास्ते कान और आँख और दिल बनाए (मगर) तुम तो बहुत कम शुक्र अदा करते हो

24

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

कह दो कि वही तो है जिसने तुमको ज़मीन में फैला दिया और उसी के सामने जमा किए जाओगे

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

और कुफ़ार कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आखिर) ये वायदा कब (पूरा) होगा

قُلْ إِنَّمَا أَلْغِمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि (इसका) इल्म तो बस खुदा ही को है और मैं तो सिर्फ साफ़ साफ़ (अज़ाब से) डराने वाला हूँ

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّتَ وُجُوهَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ

तो जब ये लोग उसे करीब से देख लेंगे (खौफ के मारे) काफ़िरों के चेहरे बिगड़ जाएँगे और उनसे कहा जाएगा ये वही है जिसके तुम ख़वास्तगार थे

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَهْلَكَنِ اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ

(ऐ रसूल) तुम कह दो भला देखो तो कि अगर खुदा मुझको और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर रहम फरमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन पनाह देगा

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ ءَامَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

तुम कह दो कि वही (खुदा) बड़ा रहम करने वाला है जिस पर हम ईमान लाए हैं और हमने तो उसी पर भरोसा कर लिया है तो अनक़रीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि कौन सरीही गुमराही में (पड़ा) है

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَّعِينٍ

ऐ रसूल तुम कह दो कि भला देखो तो कि अगर तुम्हारा पानी ज़मीन के अन्दर चला जाए कौन ऐसा है जो तुम्हारे लिए पानी का चश्मा बहा लाए